

DR. YESHI DHONDEN

Dr. Yeshi Dhonden is a former personal physician to His Holiness the 14th Dalai Lama. He has become a well known physician in India, due to his miracle and tangible treatments for cancer, one of the major causes of deaths all over the world.

2. Born on May 15, 1927 at Lhunpo Shol, a region near to Ngakar Tse in Lhoka, Chinese occupied Tibet, Dr Dhonden descended from the greater family lineage of Ngog Choeku Dorjee and Ngog Lodhen Sherab. At the age of 12, he began to enroll on the course of Tibetan medicine and astrological science at Men-Tsee-Khang (Tibetan Medical & Astro. Institute in Lhasa, Tibet.), under the tutelage of renowned physician, namely Dr Kyenrab Norbu, a personal physician to H. H. the 13th Dalai Lama, and at 20, he graduated the Institute.

3. Thereafter, Dr Dhonden practiced Tibetan medicine in the regions of Lhoka and Dhagsa, during which, many people died of an epidemic outbreak. He formulated a new recipe and was able to eradicate the deadly disease from the regions. This remarkable achievement won instant fame in his medical practice. In 1959 he came into exile in India and two years later, under the guidance and patronage of H. H. the 14th Dalai Lama, he took charge in establishing and administering Manjin Khang, (the present institute of Men-Tsee-Khang) in Dharamsala, and subsequently played multiple roles of a consulting doctor, a lecturer and a director. The following years, he did a personal physician to H. H. the Dalai Lama, and also gave medical consultations to the retinue of H. H. the Dalai Lama and Indian officials including Indira Gandhi, the former Prime Minister of India. Due to his expertise in the discipline and unrivaled patience, he became a hugely popular doctor and therefore, the first rung development of Men-Tsee-Khang was attributed to him.

4. In 1969 Dr Dhonden resigned from Men-Tsee-Khang and began to run a private clinic. But he continued to serve H. H. the Dalai Lama as a personal physician till 1980, and the twenty year medical service without any negligence and carelessness with which H. H. the Dalai Lama always feels pleased.

5. In 1967, under the instruction of His Holiness the Dalai Lama, Dr Dhonden paid a visit to Spain for medical consultations and participation in the international seminar on Tibetan medicine. Unprecedentedly, he hosted the Tibetan National Flag fluttering in the conference hall and gave an impressive presentation on Tibetan medicine, thereby being awarded with the Gold medal. Since 1980, he has been intensively travelling to Western countries, particularly the United States of America wherein he founded the Medicine Buddha Association. Subsequently he started teaching on Tibetan medicine at the Virginia University, and also agreed to join a laboratory study using Tibetan medicine to treat mice with sarcoma. In 2000, he again participated in a clinical research, on the efficacy and safety of Tibetan medicine in treating breast cancer at the San Francisco University, USA. He is the first person who has introduced the Tibetan medicine-its treatment methods and profound principles —to the western audience.

6. In 1987, Men-Tsee-Khang awarded Dr Dhonden with Manrampa Chewa, the second highest degree in the Tibetan Medicine. Since 1980, he has provided free or concessional healthcare service to hundreds and thousands of patients, namely new arrivals from Tibet, Tibetan monks and nuns regardless of religion sects, and residential countries. From the time he started running the private clinic, he has diligently served countless patients including Tibetans Indians and people from every nook and corner of the world. Even if living in a small clinic, he became a Tibetan doctor of local, national and international repute. In 1981, he participated in the international Conference of Tibetan Medicine in Washington D.C, during which, he gave a presentation on Tibetan medicine, and did medical consultations as well.

7. In 2012, he received the Yuthok Award from Central Council of Tibetan Medicine based in Dharamsala, for his outstanding dedication and significant contribution to the promotion and preservation of Tibetan medicine. Though passing through the age of 90, everyday he tries to quench the thirst of about 50-70 patients.



डॉ. येशी दोनदेन

डॉ. येशी दोनदेन परम पूजनीय 14वें दलाई लामा के पूर्व निजी फिजीशियन हैं। कैंसर, जो पूरे विश्वमें होने वाली मौतों के बड़े कारकों में से एक है, के चमत्कारिक और स्पृश्य उपचारों के कारण आप भारत में एक सुप्रसिद्ध फिजीशियन बन गए हैं।

2. आपका जन्म 15 मई 1927 को लुन्पो शोल, चीन अधिकृत तिब्बत में, ल्होका में, न्गाकार त्से के समीप एक क्षेत्र में हुआ था। आप न्गोग शोयकू डोरजी तथा न्गोग लोदेन शेराब की महान पारिवारिक वंशावली क्रम में उत्पन्न हुए। 12 वर्ष की उम्र में आपने मेन-त्सी-खांग (लहासा, तिब्बत में तिब्बती मेडिकल एवं ज्योतिष विज्ञान संस्थान) में जाने माने फिजीशियन नामत: डॉ. क्येनराब नोरबू, परम पूजनीय 13वें दलाई लामा के एक निजी फिजीशियन के साहित्य और शिक्षण में तिब्बती मेडिसिन एवं ज्योतिष विज्ञान के पाठ्यक्रम में नामांकन कराया और 20 वर्ष की उममें आपने उक्त संस्थान से स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

3. इसके बाद, आपने ल्होका और धांग्सा क्षेत्रों में तिब्बती मेडिसिन की प्रैक्टिस उस समय शुरू की, जिस दौरान एक महामारी फैलने से कई लोगों की मौत हो गई थी। आपने एक नया नुस्खा तैयार किया और उस भयानक बीमारी को उन क्षेत्रों से उन्मूलित करने में सक्षम हुए। वर्ष 1959 मे,निर्वासन में भारत आए और दो वर्षों के बाद परम पूजनीय 14वें दलाई लामा के मार्ग दर्शन और संरक्षण में आपने धर्मशाला में मैनजिन खांग (मेन्त्सी-खांग का वर्तमान संस्थान) की स्थापना और देख-रेख का कार्य संभाल लिया और परिणामस्वरूप एक परामर्शी डॉक्टर, एक व्याख्याता और एक निदेशक सहित कई भूमिकाओं का निर्वहन किया। बाद के वर्षों में आपनेपरम पूजनीय दलाईलामा के निजी फिजीशियन का दायित्व संभाला और परम पूजनीय दलाई लामा के परिजनों तथा भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सहित भारतीय अधिकारियों को भी चिकित्कीय परामर्श दिए। आत्मनियंत्रण एवं अदभुत धैर्य में अपनी विशेषज्ञता के कारण आप बहुत लोकप्रिय चिकित्सक बन गए और इसलिए मेन-त्सी-खांग के फर्स्ट-रंग विकास का श्रेय आपको प्रदान किया गया।

4. वर्ष 1969 में, आपने मेन-त्सी-खांग से त्यागपत्र दे दिया और एक निजी क्लिनिक चलाने लगे। परंतु आपने परम पूजनीय दलाई लामा को 1980 तक एक निजी फिजीशियन के तौर पर अपनी सेवाएं देना जारी रखा तथा बिना किसी चूक और लापरवाही के 20 वर्ष की चिकित्सा सेवा से परम पूजनीय दलाई लामा ने हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति की।

5. वर्ष 1967 में परम पूजनीय दलाई लामा के आदेश से आपने तिब्बती मेडिसिन पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में चिकित्सा परामर्श और भागीदारी के लिए स्पेन का दौरा किया। आपने, अभूतपूर्व रूप से सम्मेलन हाल में लहराते हुए तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज को फहराया और तिब्बती मेडिसिन पर एक प्रभावशाली प्रस्तुति दी, जिसके कारण आपको स्वर्ण पदक से पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1980 से आप पश्चिमी देशों, विशेषकर यू एस ए की अत्यधिक यात्राएं कर रहे हैं। जहां आपने मेडिसिन बुद्ध एसोसिएशन की संस्थापना की है। इसके उपरांत, आपने वर्जीनिया विश्वविद्यालय में तिब्बती मेडिसिन के संबंध में पढ़ाना आरंभ कर दिया ओर सरकोमा से चूहों के उपचार हेतु तिब्बती मेडिसिन का प्रयोग करके एक प्रयोगशाला अध्ययन में सहभागी बनने हेतु करार भी किया। वर्ष 2000 में, आपने पुन: स्तन कैंसर के उपचार में तिब्बती मेडिसिन की प्रभावोत्पादकता एवं सुरक्षा पर सैन फ्रैंसिस्को युनिवर्सिटी, यू एस ए में एक क्लिनिकल शोध में भागीदारी की। आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने तिब्बती मेडिसिन-इसके उपचार की विधियां और विस्तृत सिद्धांतों को पश्चिमी दर्शकगणों के समक्ष प्रस्तुत किया।

6. वर्ष 1987 में, मेन-त्सी-खांग ने आपको मैनरम्पा चीवा, तिब्बती मेडिसिन के क्षेत्र में दूसरी सर्वोच्च उपाधि से पुरस्कृत किया। वर्ष 1980 से, सैकड़ों और हजारों रोगियों नामत: तिब्बत से नवागंतुकों, तिब्बती मठवासियों और ननों को उनके धर्म, वर्ग और निवासी देशों का ध्यान किए बिना मुफ्त अथवा किफायती स्वास्थ्य-देखभाल सेवा मुहैया करायी है। अपना निजी क्लिनिक शुरू करने के समय से तिब्बती भारतीयों और दुनिया के कोने-कोने से आए लोगों सहित आगणित रोगियों की लगन से सेवा की है। एक छोटे से क्लिनिक में रहते हुए भी आप स्थानीयराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के तिब्बती डॉक्टर बन गए। वर्ष 1981 में, आपने वाशिंग्टन डी.सी. में तिब्बती मेडिसिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लिया था, जिसके दौरान आपने तिब्बती मेडिसिन पर एक प्रस्तुति दी और साथ ही चिकित्सा परामर्श भी प्रदान किया।

7. वर्ष 2012 में आपको तिब्बती मेडिसिन के विकास एवं संरक्षण के प्रति आपके उत्कृष्ट समर्पण और उल्लेखनीय योगदान के लिए धर्मशाला में स्थित सेन्ट्रल काउंसिल ऑव टाइबेटन मेडिसिन से यूथोक अवार्ड प्राप्त हुआ। यद्यपि आप 90 वर्ष की उम्र को पार कर रहे हैं फिर भी आप प्रतिदिन लगभग 50 से 70 रोगियों की जिज्ञासा को शांत करते हैं।